नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वक्फ कानून पर सुप्रीम कोर्ट का संतुलित फैसला

सुप्रीम कोर्ट का सोमवार का अंतरिम आदेश वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 को लेकर जारी बहस को नई दिशा देता है. अदालत ने पूरे कानून को निलंबित करने से साफ इंकार किया है, किंतु कुछ संवेदनशील प्रावधानों पर तत्काल रोक लगाकर यह संकेत भी दिया है कि संविधान और न्यायिक परंपरा के खिलाफ कोई भी बदलाव स्वीकार्य नहीं होगा. यह आदेश न्यायपालिका के उस संतुलित दृष्टिकोण का उदाहरण है, जिसमें एक ओर विधायिका के अधिकार का सम्मान है तो दूसरी ओर नागरिक अधिकारों की रक्षा का संकल्प भी.

सबसे अहम रोक उस प्रावधान पर लगी है जिसमें किसी व्यक्ति को वक्फ बनाने के लिए कम से कम पाँच वर्षों तक इस्लाम का अनुयायी होना अनिवार्य बताया गया था. यह शर्त न केवल धार्मिक स्वतंत्रता बल्कि व्यक्ति की आस्था की निजता पर भी सवाल खड़े करती थी. कोई राज्य यह कैसे तय करेगा कि कोई नागरिक कब से और कितने समय से किसी धर्म का अनुयायी है? आस्था का निर्धारण प्रशासनिक नियमों के अधीन नहीं हो सकता. कोर्ट का यह कहना कि जब तक राज्य सरकारें इस संबंध में स्पष्ट और न्यायसंगत नियम नहीं बनातीं, तब तक यह शर्त लागू नहीं होगी, संवैधानिक मूल्यों की रक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है.

दूसरा बड़ा हस्तक्षेप जिला कलेक्टर को वक्फ संपत्ति विवादों पर निर्णय का अधिकार देने वाले प्रावधान पर हुआ है. अदालत ने इसे स्थगित करते हुए साफ किया कि ऐसे मामलों का निपटारा न्यायाधिकरण द्वारा ही होना चाहिए. यह निर्णय न्यायिक प्रक्रिया की स्वायत्तता और न्यायालयीन जांच की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिहाज से आवश्यक था. यदि प्रशासनिक अधिकारी को ऐसे संवेदनशील धार्मिक-संपत्ति विवादों का निर्णायक अधिकार मिल जाता, तो पक्षपात और दुरुपयोग की आशंका बनी रहती. फिर भी, सुप्रीम कोर्ट ने पूरे कानून पर रोक नहीं लगाई. अदालत का यह कथन कि किसी भी कानून की संवैधानिकता का अनुमान उसके पक्ष में होता है और केवल दुर्लभ परिस्थितियों में ही उस पर रोक लगाई जाती है, विधायिका के प्रति सम्मान और संवैधानिक व्यवस्था के अनुरूप है. यह संदेश भी महत्वपूर्ण है कि न्यायपालिका तत्कालीन राजनीतिक या भावनात्मक दबावों के अधीन होकर किसी अधिनियम को ठुकराने के लिए तत्पर नहीं होती, बल्कि सुनवाई और गहन परीक्षण के बाद ही अंतिम निर्णय देती है.

इसी क्रम में अदालत ने वक्फ बोर्ड की संरचना से जुड़ा स्पष्ट दिशानिर्देश भी दिया. गैर-मुस्लिम सदस्यों की संख्या तीन से अधिक नहीं हो सकती. यह सीमा तय करना इसलिए जरूरी था ताकि बोर्ड की मूल धार्मिक और सामाजिक पहचान सुरक्षित रह सके, साथ ही अन्य समुदायों की प्रतीकात्मक सहभागिता भी बनी रहे.वक्फ संपत्ति के डीनोटिफिकेशन संबंधी प्रावधान पर अदालत का दृष्टिकोण भी व्यावहारिक है. जब तक अंतिम निर्णय न हो, तब तक संपत्ति को राजस्व रिकॉर्ड से हटाना न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ होगा. यदि बाद में फैसला पलटता है तो संपत्ति के स्वामित्व और प्रबंधन पर गहरे संकट खड़े हो सकते हैं. इन सभी बिंदुओं से स्पष्ट है कि सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में जल्दबाज़ी या व्यापक निषेध की राह नहीं चुनी, बल्कि एक संवेदनशील और विवेकपूर्ण रुख अपनाया है. अदालत ने विधायिका को यह अवसर भी दिया है कि वह अपने बनाए प्रावधानों की संवैधानिकता पर ठोस तर्क रखे और याचिकाकर्ता अपनी आपत्तियों को विस्तार से प्रस्तुत करें.

यह आदेश हमें यह याद दिलाता है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में कानून बनाना केवल संसद का अधिकार नहीं है, बल्कि उसे संविधान और न्यायिक समीक्षा की कसौटी पर भी खरा उतरना पड़ता है. वक्फ संशोधन अधिनियम का भविष्य अब अंतिम सुनवाई पर निर्भर करेगा, लेकिन फिलहाल अदालत ने यह सुनिश्चित कर दिया है कि न तो धार्मिक स्वतंत्रता से समझौता होगा और न ही न्यायिक प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर आंच आएगी. यही किसी लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है.

प्रगति और शांति के लिए प्रजातांत्रिक प्रक्रिया

लक्ष्मण सिंह
पूर्व सांसद

आज विश्व में जनसंख्या वृद्धि एक विकराल समस्या है, विशेषकर एशियाई देशों में . आज, जबकि विश्व के लगभग सभी देशों में विश्व व्यापार संधि अर्थात डब्लू.टी.ओ. (वर्ल्ड ट्रेड आर्गेनाईजेशन) पर हस्ताक्षर किये हैं तो किसी भी देश की प्राथमिकता व्यापार और रोजगार होती है, और व्यापार से ही रोजगार उत्पन्न होता है. शासन किसी भी दल का हो मुफ्त की योजनायें ज्यादा दिन नहीं चलती क्योंकि उनसे सरकार के खजाने खाली हो जाते हैं , जो केवल जनता पर और अधिक टैक्स लगाकर ही पुनः भरे जा सकते हैं और यह करने से महंगाई बढती है और इसका बोझ जनता पर पड़ता है.

किसी भी शासन के लिये यह भी आवश्यक होता है कि भ्रष्टाचार पर नियंत्रण करे अन्यथा नेपाल में जो आज हो रहा है वैसी स्थिति हो सकती है. वह कल चीन या भारत में भी हो सकता है क्योंकि हमारी सीमायें हजारों किलोमीटर तक लगी हुई है और नेपाल से तो हमारा रोटी और बेटी का रिश्ता वर्षों से है और रहेगा. हमारे लिये सबसे संतोषजनक बात यह है कि हमारे यहां नेपाल की तुलना में एक मजबूत संविधान है और एक सुदृड़ न्यायपालिका है. जो ऐसी स्थिति रोकने में बहुत ही सार्थक सिद्ध हो सकती है .

> आईये हम अपने देश को ऐसी किसी स्थिति से सुरक्षित रखें जहां दंगा फंसाद न हो और भ्रष्ट नेताओं, अधिकारियों को और बेनकाब करें . परंतु यह जनता के सहयोग से ही होगा और यह कार्य हम केवल जांच ऐजेसिंयों के भरोसे नहीं छोड सकते . जिन राजनेताओं की जीवनशैली सामान्य हो उसे अगले चुनाव में जनता चुने और अत्याधिक खर्चीली, वैभवशाली जीवंतशैली के नेताओं को हराकर राजनीति से बाहर रखे . तभी युवाओं की जीवनशैली में समानता आ सकती है और तभी हम राम-कृष्ण के महान भारत वर्ष को और बुद्ध, महावीर तथा अन्य वीर सैनानियों और वीरांगनाओं की बुद्धि और रक्त से सींचे गये बलिदान को सुरक्षित रख सकते है . तभी हम भारत वर्ष को सुरक्षित, विकसित और शांति का टापू बना सकते है . प्रगति, शांति के समन्वय से ही हम देश में नेपाल जैसी क्रांति को आने से रोक सकते है .

राजतंत्र और प्रजातंत्रः- नेपाल, भारत तथा चीन में आदिकाल से राजवंशों का राज रहा है राजाओं ने अपनी सैन्य शक्ति के बल पर अपने राज्य कायम किये और यह व्यवस्था कई हजारों वर्षों तक चली . केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां राम-कृष्ण ने जन्म लिया और जिनके राज्य में बहुत ही प्रजातांत्रिक प्रकिया के द्वारा राज्य किया जाता था . राम जब रावण पर हमला करने जा रहे थे तो सारे निर्णय अपने सभासदों से और वनवासियों से सलाह करके लेते थे और तभी वह श्रीलंका पर विजय प्राप्त कर पाये . श्रीकृष्ण भी अपने सखाओं से राय लेकर निर्णय लेते थे और यही कारण है कि आज राम और कृष्ण को दुनिया के अधिकांश देशों में पूजा जाता है और सम्मान दिया जाता है. यही चीन के साम्राज्य में और हमारे राजवंश के सम्राज्य में बहुत बड़ा अंतर है. जब मुगल भारत में आये तो उन्होने राजाओं के राज करने की प्रक्रिया में बहुत परिवर्तन ला दिया. प्रजातांत्रिक प्रक्रिया कही लुप्त हो गई जो पहले होती थी और बलपूर्वक जनता पर राज करने की प्रणाली चल पड़ी . जिसके कारण राजवंशों में मतभेद हुये, देश कमजोर हुआ और सैकडों वर्षों तक मुगल सम्राज्य भारत में रहा. एक बार फिर से राजवंशों एवं मुगलकालीन राजाओं को हटाने की मुहिम देश में चली .

हमारे देश में महान विद्वानों ने भी जन्म लिया जिन्होने रामचरित्र मानस अथवा भागवत गीता जैसे ग्रंथ लिखे . जिनका अनुसरण विश्व के कई देश आज भी करते है भारत में बुद्ध, महावीर जैसे महान मूर्तियों ने भी जन्म लिया जिन्हें एशिया के अधिकांश देशों में पूजा जाता है. इन्ही उपदेशों के आधार पर देश की जनता ने मुगल सम्राज्य के दमनकारी राजाओं और उन राजाओं के विरूद्ध अभियान छेड़ा जो जनता को सताते थे. शनेः शनेः अधिकांश राजाओं महाराजाओं के अत्याचार, व्याभिचार और पाप बढते गये क्योकि वह चंद चाटुकारों के कहने पर अपना प्रशासन चलाने लगे. हम अगर और पहले की चर्चा करे जब चाणक्य जैसे महान राजनीतिज्ञ ने एक चरवाहे के पुत्र को राजा बना दिया था जो चंद्रगुप्त के नाम से प्रसिद्ध हुआ और कुछ समय से ही एक प्रक्रिया चल गई थी राजा बनाने की जो वंशवाद के विरूद्ध थी. मुगल शासकों ने वंशवाद पुनः देश में लागू किया और बढते अत्याचारों के कारण स्वतंत्र भारत की आवाज बुलंद होने लगी. मुगल के बाद अंग्रेज आये और उन्होने भारत को वर्षों तक लूटा और इसके बाद एक स्वतंत्रता संग्राम छिड़ा और देश आजाद हुआ और हमें एक संविधान मिला और यह अपेक्षा की गई थी राजनेताओं से कि वह इस संविधान की रक्षा करेगें और भ्रष्टाचार को नियंत्रित कर शासन चलायेगें .

जब देश आजाद हुआ तो बहुत सारे राजवंश जिनको राज करने की आदत थी उन्होंने पिछले दरवाजे से अपनी राज करने की महत्त्वाकांक्षा को जीवित रखने के लिये राजनीति में कदम रखा और इसमें काफी समय तक वह सफल भी हुये परंतु आज वह पीढी नहीं है जो उनको सम्मान के कारण वोट देती थी. आज जो पीढी है वह आपका काम देखकर वोट देगी . यह भूतपूर्व राजवंशों को समझना चाहिये.

मालवा- निमाड़ की डायरी

अपने ही घर में घिरे सिंघार

संजय व्यास

आदिवासी कांग्रेस नेता व विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के विगत दिनों दिए आदिवासी हिंदू नहीं बयान ने तूल पकड़ लिया है. अंचल के आदिवासी नेता उनके विरोध में उतर आए, यहां तक तो उन्होंने भी सोचा होगा, पर अपने ही घर में घिर जाएंगे उन्हें उम्मीद नहीं थी. उनके विधान सभा क्षेत्र और गृह नगर गंधवानी में अचानक हवा का रुख बदला तथा क्षेत्र का हर आदिवासी सडक़ पर आ गया. सनातन काल से अपने-आप को

हिंदू बताते हुए ये आदिवासी उमंग सिंघार से माफी मांगने की बात को लेकर अड़े हुए हैं.

सर्व आदिवासी समाज ने इस बयान के विरोध में रैली निकाली, जिसमें गांव-गांव, फालियों, पंचायतों से आदिवासी पहुंचे. प्रदर्शनकारियों ने सिंघार के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए ज्ञापन भी राष्ट्रपति के नाम प्रेषित किया. रैली की खास बात यह रही कि इसमें कई कांग्रेसी भी शामिल हुए. अपने ही गढ़ में सिंघार को उनके अनुयायी समाज से कतई उम्मीद नहीं थी कि उनके बयान की खिलाफत में मोर्चा खोल देंगे.

इसके पूर्व नेपानगर, खंडवा, बड़वानी, खरगोन, अलीराजपुर, धार में सिंघार के विरोध में सुर फूटे थे, मगर वे भाजपाई थे. वर्षों से यह विधान सभा जीतते आ रहे सिंघार के लिए यह पहला मौका है जब उन्हें इतने बड़े पैमाने पर क्षेत्रवासियों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है. अगर नहीं सम्हले तो आगे उनकी राजनीतिक जड़ें हिलने में देर नहीं लगेगी.

कृषि क्षेत्र के लिए खतरे की घंटी

लोकहितकारी विकास तक के लिए लैंड पुलिंग नीति अच्छी है, कार्य जल्दी पूर्ण होंगे, मगर मालवा-निमाड़ की उपजाऊ सिंचित भूमि पर अगर धड़ल्ले से निजी टाउनशिप-कालोनियां बनने लगी तो यह यहां के कृषि क्षेत्र के लिए खतरे की घंटी है. अनउपजाऊ, पड़ती भूमि पर यह योजना ठीक है, पर उपजाऊ भूमि का उपयोग हुआ तो मुश्किल खड़ी हो सकती है.

नई नीति के अनुसार किसान, किसानों के समूह या निजी व्यक्ति लैंड पुलिंग करके टाउनशिप बना सकेंगे. जब यह साकार होंगी तो अंचल को इसकी बड़ी कीमत चुकाना पड़ सकती है. शीघ्र बड़ी राशि मिलने के चक्कर में किसान जमीन बेचेंगे, लेकिन उन्हें ध्यान नहीं रहेगा कि पैसा कितनी जल्दी कहां खत्म हो जाता है, जबकि कृषि भूमि फसल से राशि नाममात्र मिले, फिर भी जीवन पर्यंत आजिवीका का साधन रहती है. यदि इस नीति में भरमार कालोनियां विकसीत होती रही तो एक समय ऐसा आएगा जब उपजाऊ भूमि के अभाव में अंचल अन्न संकट का सामना करेगा.

योजना सफल, पर सिर पर तलवार

उज्जैन में कांग्रेस सृजन अभियान सवालों के घेरे में है. कार्यकर्ताओं को लगता है कि रायशुमारी को दरकिनार कर उनके साथ खेला कर दिया. इसके लिए वे प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी को जिम्मेदार मान रहे है. उनका मानना है कि जिलाध्यक्ष की नियुक्ति में एक खेमे को ही तवज्जो दी गई. हाल ही में आयोजित किसान न्याय यात्रा अंदर ही अंदक सुलग रहे इन कार्यकर्ताओं की नाराजगी खुलकर सामने आ गई. उन्होंने अवसर भी ऐसा चुना कि राष्ट्रीय स्तर तक बात पहुंचे. उज्जैन में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी और सचिन पायलट के नेतृत्व में किसान न्याय सभा हो रही थी, वहीं दूसरे खेमे के कार्यकर्ताओं ने प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी का पुतला फूंक दिया. विवाद की जड़ ग्रामीण जिला अध्यक्ष महेश परमार की नियुक्ति है, जिसे नाराज कार्यकर्ताओं ने मनमाना और सर्वे रिपोर्ट की अनदेखी बताया. इस घटना से मामला सुर्खियों में आ गया और उपर तक चर्चा मे रहा. कार्यकर्ताओं का नाराज खेमा अपनी योजना में सफल भले ही रहा, लेकिन अब उन पर अनुशासनहीनता की तलवार लटक रही है.

सरकारी मेडिकल कॉलेजों की तादाद बढ़ाएं

महाराष्ट्र में मेडिकल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए निजी विश्वविद्यालयों को यह पाठ्यक्रम शुरू करने की अनुमति दी जाएगी. सरकार का यह निर्णय आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि इसके पहले भी इंजीनियरिंग व मैनेजमेंट की सीटें इसी तरीके से बढ़ाई गई थीं. राज्य में इंजीनियरिंग कॉलेजों की तादाद इतनी बढ़ गई कि पिछले 1 दशक से ज्यादा समय में इन निजी कॉलेजों की 30 से 40 प्रतिशत सीटें खाली रह जाती हैं. वैसे इंजीनियरिंग की तुलना में मेडिकल सीटों की तादाद में वृद्धि नहीं हुई है. इस समय राज्य में मेडिकल सीटों की संख्या 9,000 से कुछ अधिक हैं. महाराष्ट्र की आबादी को देखते हुए यह संख्या काफी कम है. इसलिए महाराष्ट्र के छात्र अन्य राज्यों में या विदेश जाकर मेडिकल की पढ़ाई करने के लिए बाध्य हुए हैं. विगत वर्षों में रूस और यूक्रेन में डॉक्टरी पढ़ने गए छात्रों को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ा था. इसे देखते हुए राज्य में मेडिकल शिक्षा विस्तार की आवश्यकता है. इस समय राज्य में वैद्यकीय शिक्षा के सभी पाठ्यक्रमों का संचालन नाशिक के स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की ओर से किया जा रहा है. नए मेडिकल कॉलेजों को अनुमति देने का अधिकार इस विश्वविद्यालय को है. इसके

सरकार को चिकित्सा सेवा का विस्तार करना है, तो जिले के मुख्यालय में सरकारी अस्पताल से संलग्न मेडिकल कॉलेज खोले. इससे आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्र प्रवेश ले सकेंगे.

अलावा मुंबई, पुणे, कोल्हापुर, नागपुर व वर्धा में मेडिकल शिक्षा के लिए अभिमत विश्वविद्यालय या डीम्ड यूनिवर्सिटी हैं. मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए बुनियादी सुविधाओं का निर्माण आवश्यक है. उससे जुड़ा हुआ अस्पताल रहना चाहिए. ऐसे अस्पताल की सुविधावाली निजी संस्थाएं मेडिकल कॉलेज बनाने का कदम उठा सकती हैं. एक मुद्दा यह भी है कि निजी मेडिकल कॉलेजों की फीस बहुत अधिक होती है. प्रति वर्ष 10 लाख रुपए या उससे अधिक फीस देने की क्षमता वाले विद्यार्थी वहां प्रवेश ले सकते हैं. सरकार को चिकित्सा सेवा का विस्तार करना है, तो जिले के मुख्यालय में सरकारी अस्पताल से संलग्न मेडिकल कॉलेज खोले. इससे आर्थिक दृष्टि से कमजोर छात्र प्रवेश ले सकेंगे.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

किसानों के प्रति वेरी काइंड गडकरी का गोल्डन माइंड

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, अधिकांश राजनेता बहुत कुछ छुपाते हैं लेकिन केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी सब कुछ बेबाक खुलकर बताते हैं. उनके शब्दों में गहन आत्मविश्वास और सचाई हुआ करती है. गडकरी का यह दावा हर किसी को सोचने के लिए प्रेरित करता है कि उनका दिमाग 200 करोड़ रुपए प्रतिमाह का है. इसे आप सुपर क्रिएटिव या अति सृजनशील मस्तिष्क कह सकते हैं. हमने कहा, राजनीति में गडकरी बहुत सीनियर हैं. जब वे महाराष्ट्र में मंत्री थे तब उन्होंने मुंबई में 36 फ्लाईओवर बनवा कर यातायात सुचारू किया था. उस समय अमिताभ बचन ने उन्हें धन्यवाद देकर उनकी पहल व कर्मठता पर बधाई दी थी. उन्होंने देश में इतनी सड़कें बनवाईं कि लोग उन्हें रोडकरी कहने लगे. गडकरी ने कहा कि मैं ईमानदारी से कमाता हूं और व्हीलर-डीलर नहीं हूं. मैं कोई संत नहीं हूं, बल्कि राजनेता हूं. विदर्भ में 10,000 किसानों की आत्महत्या शर्मनाक है. मैं किसानों को संपन्न बनाने तक रुकूंगा नहीं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल मिलाने के गडकरी के फैसले का पेट्रोल लॉबी ने विरोध किया है और कहा है कि इससे वाहन खराब होंगे तथा माइलेज घटेगा. हमने कहा, मक्के से इथेनॉल का निर्माण किसानों को फायदा पहुंचाएगा. अछे कदमों का लोग स्वार्थवश विरोध करते हैं लेकिन गडकरी अपना बढ़ाया हुआ कदम पीछे नहीं लेते. वह पुरानी गाड़ियों को स्क्रैप करने के पक्ष में हैं जिससे प्रदूषण रुकेगा और वाहन निर्माताओं को मेटल भी उपलब्ध होगा.

हमने कहा, गडकरी का दावा है कि उनके कार्य और अनुभव के पीछे किसानों के कल्याण का विचार और उद्देश्य है. उन्होंने अपने बेटे के आयात-निर्यात के व्यवसाय की चर्चा करते हुए कहा कि उसने ईरान से 800 कंटेनर सेब मंगाए और यहां से 1,000 कंटेनर केला वहां भेजा. गोवा से 300 कंटेनर मछली मंगाकर उसे सर्बिया भेजा. उनके बेटे ने ऑस्ट्रेलिया में दूध पाउडर बनाने की फैक्टरी लगाई. वह 150 कंटेनर अबूधाबी व अन्य स्थानों को भेजता है. उनके बेटे की आईटीसी के सहयोग से 26 राइस मिलें हैं. गडकरी अपने सुपुत्र को सिर्फ आइडिया दिया करते हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यदि नेता अपने पुत्रों को बिजनेस करने की प्रेरणा और प्रोत्साहन दें तो वंशवादी राजनीति का नामोनिशान नहीं रहेगा. पिता पॉलिटीशियन रहेगा तो बेटा बिजनेसमैन ! फिर देखना भारत की इकोनॉमी कितनी जल्दी विश्व में तीसरे स्थान पर पहुंचने का लक्ष्य हासिल कर लेगी.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12023 - डॉ सागर खादीवाला

ऊपर से नीचे
1. शक्ति, सामर्थ्य 2. पत्र आदि पर लिखा किसी का नाम और रहने की जगह 3. घ्राणेंद्रिय, प्रतिष्ठा, मान 4. अर्क, खमीर छानकर बनाई हुई औषधि 6. बहुत से लोगों का एक जगह पर जमाव, जमघट 8. एक प्रसिद्ध श्वेत रंग की चमकदार धातु 10. ऊधम, तैयारी के साथ किए जाने वाले किसी बड़े काम या उत्सव का हल्लागुल्ला 13. निर्जन, एकांत, जहां कोई न हो 14. छाया 15. फंदा 16. सेंध (उर्दू) 17. कीचड़ में उत्पन्न होने वाला, कमल 18. शीतकाल, सर्दी 21. निगलना, हड़प जाना 23. एकाक्ष, एक आंख का 24. प्रकृष्ट बुद्धिवाला, गतिमान, उच्चकोटि का जानकार (सं.)

बाएं से दाएं
1. 2. पत्थर के समान कठोर हो जाना, चेतनाशून्य हो जाना 5. अपना समझने का भाव, स्नेह, मोह 7. बिनौली सहित रुई, रुई का पौधा 9. राज मुकुट 10. सूर्य प्रकाश, सुगंध के लिए गंध द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुंआ 11. राजा, सरदार 12. अपराध या दोष रहित, बेगुनाह 15. पवित्र या शुद्ध करने वाला 17. उंगलियों और हथेली का संपुट 19. खेलने के काम का मोटे कागज का चौकोर टुकड़ा जिस पर बुटियां या तस्वीर होती है 20. बिना खिला फूल 22. किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द, उपवास 24. बहुत बलि, प्रचंड (सं.) 25. एक यज्ञ जिसमें जनमेजय ने नागों का पूर्ण विनाश किया था (महाभारत)

Solution 12022

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में राजनैतिककार्यो में सफ्लता मिलेगी, नवीन योजनों का शुभारंभ होगा, वर्षके मध्यमेंतीर्थ यात्रा या धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी, राज सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी,वर्ष के अन्त में पारिवारिक चिन्ता से मन विचलित रहेगा, कार्यक्षेत्र में आकस्मिक रूकावटें आयेंगी, धन संकट का सामना करना होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को नवीन योजनाओं मेंवृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियोंको राजसम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को तीर्थ यात्रा करना होगी, धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक परेशनी से मन विचलित रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों के स्वास्थ्य की चिन्ता हो सकती है, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को साहस बना रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्ति यात्रा प्रवास के शौकीन होते हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील व्यक्तित्ववान परिश्रमी होगा. शरीर से कोमल एवं भावुक मन का होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. कम बोलेगा, जो भी बोलेगा, वह बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण होगा. यात्राप्रिय रहेगा.

मेष- आमोद प्रमोद के साधन उपलब्ध रहेंगे. किसी व्यक्ति से भेंटवार्ता होगी. अतिथि आगमन का योग है. पत्राचार करते समय सावधानी सतर्कता रखें.

वृषभ- कौटुम्बिक कार्यो में सावधानी रखकर कार्य करें. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी. अतिथि सत्कार होगा. यश एवं मान प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

मिथुन- कौटुम्बिक मामलों में सावधानी रखें. वायदा सोच विचार कर करना उचित होगा. खर्चो पर नियंत्रण रखने का प्रयास करें. प्रवास का योग है.

कर्क- प्रतिष्ठा एवं सम्मान मिलेगा. शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी. अतिथि आगमन हो सकता है. व्ययभार बढ़ेगा. परिश्रम अधिक करना पड़ सकता है.

सिंह- वाहनादि का प्रयोग करते समय सावधानी रखें. निजी पुरूषार्थ की प्राप्ति होगी. मित्र के संबंध में नवीन समाचार प्राप्त हो सकता है.

कन्या- पारिवारिक मतभेद हो सकते हैं. दूसरों के कारण आपको परेशानी हो सकती है. अज्ञात भय एवं चिन्ता का समाधान होगा. परिश्रम रहेगा.

तुला- किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, खर्च बढ़ेगा. शत्रु वर्ग पराजित होगा. निजी मामलों को स्वयं सुलझाने का प्रयास करें. हर्ष बना रहेगा.

वृश्चिक- व्यापार व्यवसाय में सावधानी रखें. पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. अनावश्यक विवादों को टालें.

धनु- धार्मिक कार्यो में खर्च होगा. आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में प्रगति होगी. मन में शांति और संतोष बना रहेगा. साहसिक प्रयत्नों की पूर्ति होगी.

मकर- नौकरी एवं राजकीय कार्यो में संलग्नता रहेगी. मन में संतोष बना रहेगा. सोचे हुये कार्यो में विलंब हो सकता है. परिश्रम की अधिकता बनी रहेगी.

कुम्भ- घर में अतिथि आगमन का योग है. अनावश्यक विवाद न बढ़ायें. कार्य में विलंब होगा. मांगलिक कार्यो पर विचार होगा. यात्रा सुखद रहेगी.

मीन- राजनैतिक कार्यो में सावधानी रखें. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. कार्य में विलंब होगा. धार्मिक यात्रा हो सकती है. पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण दशमीं भौमवासरे रात 2/40, आर्द्रा नक्षत्रे दिन 10/23, व्यतिपात योगे प्रातः 7/6 तदुपरि वरीयान योगे रातअंत 4/37, वणिज करणे सू.उ. 5/55 सू.अ. 6/5, चन्द्रचार मिथुन रात 3/43 से कर्क, पर्व- दशमीं श्राद्ध, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण दशमीं को आर्द्रा नक्षत्र के प्रभाव से समस्त प्रकार के अनाजों में जैसे गेहूँ, जौ, चना, मक्का, बाजरा, के भाव में जोरदार मंदी होने की संभावना है, तिल, तेल, तिलहन,सरसों के भाव में साधारण नरमी होगी. भाग्यांक 1475 है.

SUDOKU 7155

2	9		3	1			8	
3	6		2		7		9	
		7			6		2	1
	7		1					
1	3			4			7	2
					5		4	
6	2		4			9		
	5		6		9		1	8
	1			5	3		6	4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7154

3	9	7	5	1	4	6	8	2
1	2	8	6	9	3	4	5	7
6	4	5	2	8	7	1	3	9
5	7	3	4	6	9	2	1	8
2	1	9	7	5	8	3	4	6
4	8	6	3	2	1	7	9	5
9	3	2	8	4	6	5	7	1
7	6	1	9	3	5	8	2	4
8	5	4	1	7	2	9	6	3